P.G.
SEM-II
Paper-9

डा० कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

Date

प्रश्न :- 'गोदान' में प्रस्तुत विभिन्न सामाजिक समस्याओं का उल्लेख कीजिए?

उत्तर :- 'गोदान' मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित उत्तम जीवन तथा कृषि संस्कृति का महाकाव्य है। इसे भारतीय किसान के संघर्ष की गाथा तथा उसकी त्रासदी कहा गया है। गोदान की आधारित कथा तो होरी तथा उसके परिवार से सम्बद्ध होने के कारण ग्राम जीवन से जुड़ा है, पर उसकी प्रासंगिक कथा का सम्बन्ध नगर में रहनेवाले पात्रों - रायसाहब मालती, मेहता, खन्ना आदि तथा उनकी समस्याओं से है। 'गोदान' में चित्रित सामाजिक समस्याएँ निम्नलिखित हैं -

1. नारी की समस्या - गाँव के लोग परंपरा प्रेमी होते हैं। ये प्राचीन जीवन मूल्यों, विश्वासों, रूढ़ियों से चिपके हुए हैं। अतः नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण वही है जो पुरुष प्रधान समाज का रहा है। वे नारी को अपना जरखरीद गुलाम समझते हैं, उसे उस गाय की तरह मानते हैं, जिसे किसी भी खूंटे से उसकी इच्छा के विरुद्ध भी बाँधा जा सकता है। होरी, धनिया जैसी उग्र स्वभाव तथा निर्भय स्त्री को भी दबाकर रखना चाहता है। भोला अधेड़ उम्र का आदमी होकर भी नवयुवती से दूसरा विवाह करता है और उसको वह दासी की तरह रखता है। उच्च जाति का मातादीन चमार जाति की स्त्री सिलिया से यौन सम्बन्ध होते हुए भी उसे पत्नी नहीं बनाना चाहता है केवल रखैल के रूप में ही रखना चाहता है। सोना का पति मथुरा विवाहित और घर में सुन्दर पत्नी के होते हुए भी सिलिया चमारिन पर डोरे डालता है। उधर नगर में खन्ना पत्नी के होते हुए भी मालती के चक्कर में फँसा हुआ है। अपनी पत्नी गोविन्दी के साथ उनका

Date

व्यवहार उपेक्षा, उदासीनता तथा क्रूरता भरा है। मीनाक्षी का पति शराबी वेश्यागामी तथा विलासी है। अतः वह भी मीनाक्षी के साथ पति का धर्म नहीं निभाता है। एक ओर प्रेमचन्द ने नारी की दयनीय स्थिति का चित्रण करके नारी जीवन की समस्याओं पर प्रकाश डाला है। दूसरी ओर प्रेमचन्द ने धनिया मीनाक्षी जैसी उग्र स्वभाव वाली सशक्त स्त्रियों का चित्रण करके तथा 'वीमेन्स लीग' जैसी संस्था की स्थापना करके और वहाँ होनेवाले कार्यक्रमों का परिचय देकर यह स्पष्ट संकेत दिया है कि नारी जाति में अपने अधिकारों के प्रति बोध जाग्रत हो रहा था; वे पुरुष के अत्याचारों को मौन रहकर चुपचाप सहने की बजाय विद्रोह करने लगी थी।

2. स्वतंत्र प्रेम की समस्या — भारतीय समाज में आज भी अधिकांश विवाह माता-पिता के द्वारा तय कीए जाते हैं और स्वच्छन्द प्रेम को अच्छा नहीं समझा जाता, परन्तु युवक-युवती के बीच परस्पर आकर्षण सहज एवं स्वभाविक है। युवक युवती चाहते हैं कि उनके प्रथम प्रेम विवाह में परिणत हो जाय। 'गोदान' में इस स्वच्छन्द प्रेम की परिणति दो प्रकार से दिखायी गयी है —
पहला उदाहरण झुनिया का है। झुनिया विधवा है। दूसरी जाति की है पर गोबर प्रथम दृष्टि में ही उसे प्रेम करने लगता है। दोनों के बीच यौन संबंध भी हो जाता है। गोबर गाव वालो, गाव की पंचायत और माता-पिता सबसे डरता है। उसे यह आशंका है कि उनके विवाह को कोई स्वीकार नहीं करेगा, फिरभी वह साहसपूर्वक झुनिया को घर ले जाता है। धनिया की उदारता के कारण दोनों का विवाह हो जाता है। परंतु गाँव वाले और गाँव की पंचायत उसे स्वीकार नहीं करते और होरी को दण्ड स्वरूप अपने घर

में रखा सारा अनाज और नकद तीस रुपये देने पड़ते हैं और उन रुपयों के लिए अपना घर तक गिरवी रखना पड़ता है।

गांव में स्वच्छन्द प्रेम का दूसरा उदाहरण है - मातादीन - सिलिया प्रसंग। मातादीन ब्राह्मण है सिलिया चमारिन है। दोनों के बीच परस्पर आकर्षण के बाद यौन संबंध स्थापित हो जाता है। यहाँ भी जाति का भय है। मातादीन उतना साहसी नहीं है जितना गोबर। अतः सिलिया को पसंद करते हुए भी उससे विवाह करने को तैयार नहीं होता है। गांव के नवयुवकों द्वारा विरोध किए जाने पर, उसके मुँह में हड्डी डालकर उसे चमार बनाने के दुःसाहस के बाद ही वह सिलिया को पत्नी के रूप में अपनाता है।

नगर में स्वच्छन्द प्रेम का उदाहरण है - सरोज तथा रायसाहब के बेटे रुद्रपाल का प्रणय सम्बन्ध, मालती - मेहता का परस्पर प्रेम। रुद्रपाल पिता के तर्क वितर्क, लाभ हानि की बातों पर ध्यान न देकर सरोज से विवाह का दृढ़ संकल्प करता है। मालती - मेहता के मार्ग में कोई बाधा नहीं है फिर भी प्रेमचन्द की आदर्शवादिता उन्हें विवाह बन्धन में नहीं बँधने देती। मेहता के आलिंगन का सुख भोगकर, उसकी घर गृहस्थी का सारा बोझ संभालने के बाद भी वह विवाह नहीं करती।

3. विवाह संबंधी समस्याएँ :- विवाह संबंधी जिन समस्याओं का चित्रण 'गोदान' में हुआ है वे हैं -(क) दहेज के कारण विवाह होने में बाधा।
(ख) बाल विवाह तथा विधवा की समस्या
(ग) अनमेल विवाह या वृद्ध विवाह। होरी की बड़ी बेटी सोना के विवाह में दहेज बाधा बनता है परन्तु मथुरा का सोना के प्रति प्रबल आकर्षण